10

जीवनि के परिणामनि की...

जीवनि के परिणामनि की यह
अति विचित्रता देखहु प्राणी ।

नित्य निगोद मांहि तैं कढ़िकर नर पर्याय पाय सुखदानी।
समकित लहि अन्तर्मुहूर्त में, केवल पाय वरै शिवरानी।।1।।
जीवनि के परिणामनि की...

मुनि एकादश गुणस्थान चढ़ि, गिरत तहाँ तें चित भ्रम ठानी।
भ्रमत अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, किंचित् उन काल परमानी।।2।।
जीवनि के परिणामनि की...

निज परिणामन की संभाल में, तातैं गाफिल मत ह्वै प्राणी।
बंध मोक्ष परिणामनि ही सों, कहत सदा श्री जिनवर वाणी।।3।।
जीवनि के परिणामनि की...

सकल उपाधि निमित्त भावनि सों, भिन्न, सु निज परिणति को छानी।
ताहि जान रुचि ठानि होहु थिर, 'भागचन्द' यह सीख सयानी।।4।।
जीवनि के परिणामनि की...

हे प्राणी! जीवों के परिणामों की यह अति विचित्रता तो देखो।।टेक।।

कहीं तो इस जीव ने नित्य निगोद से निकलकर सुखमयी नर पर्याय को प्राप्त किया और अन्तर्मुहुर्त में ही सम्यग्दर्शन प्राप्त कर तथा केवलज्ञान प्रगटकर मोक्ष भी प्राप्त कर लिया।।१।।

दूसरी ओर कोई मुनिराज ग्यारहवें गुणस्थान तक चढ़कर भी गिर जाते हैं और वापस मिथ्यात्व अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं और कुछ समय कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक संसार ही में परिभ्रमण करते हैं।।२।।

इसलिये जिनेन्द्र भगवान कहते हैं कि हे विषयों में गाफिल जीव ! सावधान हो जाओ और अपने परिणामों की संभाल करो क्योंकि बंध और मोक्ष दोनो परिणामों से ही होता है।।३।।

कविवर भागचन्दजी कहते हैं कि समस्त कर्मोपाधियों के निमित्त से होने वाले भावों से भिन्न अपनी सम्यक् परिणति को पहचानो और उसे जानकर, निश्चयकर उसमें रुचिपूर्वक स्थिर हो जाओ यह ही जिनधर्म की शिक्षाओं का सार है।।४।।